मिथिलाक माटिक सुगन्ध

(मैथिली कवितासँग्रह)

मिथिलाक माटिक सुगन्ध

(मैथिली कवितासँग्रह)

झौली पासवान

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

MITHILAK MATIK SUGANDH

Anthology of Maithili poems by Shri Jhauli Paswan

ISBN: 978-93-48865-32-8
दाम: 290/- (भा.रु.)
स्वत्वाधिकार (©) : लेखक (श्री झौली पासवान)
पहिल सस्करण: 2025

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: +91 62006 35563; +91 99316 54742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती अपूर्वा सरकार, नोएडा, दिल्ली एनसीआर, 201301
अक्षर संयोजन: सुश्री पल्लवी मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। स्वत्वाधिकारी (श्री झौली पासवानजी)क लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानकसँग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवासँचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण

पिता स्व. गरीब नाथ पासवान आ
माता स्वर्गीया फुलेसरी देवीक
स्मृतिमे

- झौली पासवान

भूमिका

चलैत-फिरैत, बाट-घाट
उचरल मनक साँच बात
नहि मात्रहि सुनल कानसँ
देखल जे आपन आँखिसँ
आ लिखा गेल जे कागतपर
ओएह हम्मर कविता छी।

किछु बाध-बोन किछु गाम-घर
किछु हाट आ बाजारसँ
किछु सरकारी दफ्तरसँ आ
किछु प्रकृतिक आँचरसँ

बीछल जे रंग बिरंगक मोती
ओएह हम्मर कविता छी।

प्रस्तुत पोथी मिथिलाक माटिक सुगन्ध यथार्थवादक धरातलपर गढ़ल पद्य संग्रह अछि, जाहिमे कल्पना अत्यल्प आ वास्तविकता बेसी भेटत। मिथिलाक माटि-पानिसँ जुड़ल एहि संग्रहमे मिथिलाक सभ्यता, संस्कृति, मैथिली भाषाक माधुर्य, धार्मिक परम्परा आ ओइमे लहरचुट्टा जकाँ सट्टल अन्धविश्वासक संगहि देशक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक

स्थिति आ अमरलत्ती जकाँ लतरल विषमताक समीक्षात्मक वर्णन पद्यक माध्यमसँ करवाक प्रयास कएल गेल अछि। सत्ता लोलुप नेतृत्व, बाल वर्गमे अनेकानेक संभावना, देशमे मनरेगा योजनाक रहितो मजदूरक पलायन, नारी आ बंचित वर्गक दुर्दशाक वर्णन एहि पोथीमे भेटत। हम वैज्ञानिक युगमे जीब रहल छी। मुदा आइयो हमरा आगूमे अन्धविश्वास टाल ठोकि रहल अछि। अन्ध विश्वास हम्मर पछोर धेनहि अछि। आइ प्रतिव्यक्ति शिक्षाक दर बढ़ि रहल अछि मुदा एहेन शिक्षाक कोन महत्व जे हमर विवेकशीलताकेँ नहि जगा सकए। शिक्षा बढ़ितो आइ लोकक विवेक नहि जागि रहल अछि जाहि कारणेँ ओ अगराहीक धनछोहा सभक झाँसामे पड़ि आपसमे लड़ैत-झगड़ैत रहै अछि। परम्पराक बन्हनमे जकड़ल झूठपर सच्चाइक पर्दा लागल अछि जाहिसँ आइयो लोक उबरि नहि सकल अछि। आइयो लोक बाढ़ि, अकाल आ महामारीकेँ भगवानक देन बुझि ओइसँ बँचबाक लेल कोबला-पाती कइये रहल अछि। अप्पन कर्मक फलपर ओकरा विश्वास कहाँ छै? ओ भाग्यवादी बनि (आँखि निपोड़ि) आँखि निपोड़ि कऽ ताकि रहल अछि। सभ तरहक प्राकृतिक प्रकोप मनुक्खेक कर्मक फल अछि से मनुक्ख स्वीकारैले तैयार नहि अछि-

खत्तामे देलक हत्ता
ओ भरलक चभच्चा।
मनुक्खक भेल कुच्चर
तेँ धार भेल उत्थड़।

उपला जाइत अछि कनियेंमे
नामी गामी धार सभ
बगल के गाम घर सभ

भसिया जाइत अछि बाढ़ि मे

योजना परियोजना मे
ग्राम सड़क योजनामे
ढ़ेरो लगैत अछि लागत
मुदा नहि हिफाजत।

सभ ठाम नफाखोरी
कहू नाओं केकर हम।

आइ निच्चाँसँ ऊपर धरि सभ नफाखोरीक धन्धामे लागि गेल अछि। पहिने गाम-घरमे सड़कक काते-कात खत्ता देखल जाइ छल। बरसातमे बरखाक जल खत्ते-खत्ते बाहर निकलि जाइ छल। आब ओ खत्ता सभ कहाँ देखै छी। खत्ताक कातमे जकरा सभक खेत छेलै ओ सभ खत्ताकेँ भरिकऽ अप्पन खेतमे मिला लेलक। परिणाम ई अछि जे कनियोँ बरखामे लोकक घर-आँगन बरखाक जलसँ भरि जाइत अछि। आइ सरकारी तंत्रमे लागल नेता आ पदाधिकारी सभ नफाखोरीमे लागल अछि, देखि रहल छी जे बड़का-बड़का पुल दुइये तीन सालमे धराशायी भऽ जाइत अछि। पैसाक धुनिमे सभकियो जनकल्याणक भावनाकेँ बिसरि गेल अछि। आइ दुनियाँक गरम बाजारमे पैसा सर्कसक 'रींग मास्टर' बनि सभकेँ नचा रहल अछि। आ तेँ सभकियो नीति अनीतिकेँ बिसरि 'रींग मास्टर'क इशारापर नाचि रहल अछि। अप्पन देशमे प्रजातंत्रक सरकार अछि। जनता अप्पन कीमती भोँटसँ अप्पन प्रतिनिधिकेँ चुनैत अछि। मुदा ईहो क्षेत्र 'रिंगमास्टर'क प्रभावसँ कहाँ मुक्त अछि? जनता आइयो अप्पन भोँटक महत्वकेँ नहि बुझि रहल अछि आ नेता धनजनक प्रयोगसँ सत्ताकेँ हथि लैत अछि आ हँसूआक वियाहमे खुरपीक गीत गबैत रहैत अछि।

जतए लोककेँ पढ़ाइ-लिखाइ, रोजी-रोजगारक अलावे आइक समस्यापर विचार करब आवश्यक अछि ततए देखै छी जे अन्धविश्वासी मार्गपर जोर दैत भूतमे भुतियबैक प्रयास कएल जा रहल अछि। तेकरे परिणाम अछि जे देशक जनता आइयो लचरले अछि आ नेता सभ भोकना बिलाड़ बनि अय्यासीपूर्ण जिनगी हँसिकऽ बिता रहल अछि। ओ देशक गरीब जनताक विकासक बात की सोचत? अप्पन सात पीढ़ीक लेल आर्थिक धूरी मजगूत करत। बेटी बचाऊ, बेटी पढ़ाऊक नारा आइ सर्वत्र श्रुतिगोचर होइत अदि आ बेटी पढ़ियो रहल अछि मुदा तैयो बेटी सुरक्षित कहाँ अछि? एक दिस एतेक खर्च करि कऽ बेटीकेँ पढ़ाऊ आ दोसर दिस जमीन बेचिकऽ दहेज दए विवाह करू। दहेज-दानोक शिकार बेटी आइयो भुकुर-भुकुर कानियेँ रहल अछि। माइक कोखिमे बेटीक भ्रूणहत्या भइये रहल अछि। शिक्षाक संचार होइतो दहेज प्रथा आइयो धकाधक चलिये रहल अछि। तइमे हम्मर बिहार कनियोँ पाछू नहियेँ अछि। कहवाक लेल अप्पन देश कृषि प्रधान अछि मुदा तकरो दशा नीक कहाँ अछि। श्रम शक्ति कोनो देशक विकासक आधार होइत अछि मुदा एतए श्रमशक्तिक अपमान भऽ रहल अछि। जँ हम बिहार राज्यक बात करी तँ एतुक्का श्रमशक्ति दोसर राज्य आ देशक रीढ़ बनि गेल अछि। हम ईहो नहि कहि सकै छी जे अप्पन देशक विकास नहि भऽ रहल अछि। विकास भऽ रहल अछि। लोक आई चानपर अप्पन झण्डा फहरा रहल अछि मुदा विषमतो तहिना सीमा पार कऽ चुकल अछि।

“गरीबी अमीरी जमीन आ समान सन
नेता सभ चालि चलय बनिया बेकाल सन।”

आइ अमीरी गरीबीक बीच एहेन खाइ बनि गेल अछि जे एक वर्ग जमीनपर लाचारी झेल रहल अछि दोसर वर्ग आसमानमे अट्टाहास कऽ रहल अछि। नेता सभ स्वार्थान्ध भऽ गेल अछि। ओकरा सभक चरित्र हू-बहू व्यापारी जकाँ भऽ गेल अछि।

मिथिलांचल आ मैथिलीक चर्चा करी तँ ईहो क्षेत्र 'रिंग मास्टर'क प्रभावसँ बंचित नहियेँ अछि। ओना तँ मैथिल आ मैथिली भाषा अप्पन देशक सीमा टपि विदेशोमे चर्चित भऽ रहल अछि। मैथिल लोकनि विदेशमे अप्पन गौरवक बखान खूब कऽ रहल छथि। किएक ने करता। खूब करथु। मैथिल तँ स्वभावहिसँ गौरवशाली होइते अछि। मुदा अप्पन माटि-पानि परहक बंचित समाजक दुर्दशा, नारीक दुर्दशा आ शिक्षाक धारासँ कटल नेन्ना-भुटकापर हुनका लोकनिकेँ कनियोँ धियान नहि छैन। ओ सभ सरकारीए व्यवस्थाक खानापुरीसँ संतुष्ट छथि। 'मिथिलाक माटिक सुगन्ध'मे उल्लिखित पद्यक माध्यमसँ प्रवासी मैथिललोकनिक आह्वान कएल गेल अछि जे ओ अप्पन माटि-पानि परहक नारी आ बंचित समाजक कल्याणार्थ सेहो अप्पन दृष्टिकोणकेँ बदलथि आ आ अइ सूतल समाजकेँ जगाबथि-

हे ज्ञान दिवाकर! ज्योतिपुंज
जगमग सकल जहान,
अहीं केर ज्योतिपूंजसँ
तेयौ आँगन अप्पन अन्हार
कहू! ई नहि कलंक अछि?

देशक सीमा पार, अपन सम्पर्क बनल अछि
तेयौ निज आँगन किएक सम्पर्क रहित अछि।
लाखो बचपन लेटा रहल अछि धूलमे
जेकर उमेर आखर सिखबाक स्कूल मे
कहू! ई नहि कलंक अछि?

सम्पर्क क्रांति, स्वरसँगमक
संयुक्त राह सभ मिलि धरू
चाही मिथिलाक विकास तँ
जागू मैथिल, जगाऊ मिथिलाकेँ
मिथिलाक माटिक पुकार सुनू।

कर्त्तव्य आ अधिकार एहेन कड़ी अछि जे समस्त संसारकेँ जोड़ि कऽ रखने अछि। मुदा अर्थ लोलुपताक कारणेँ कर्त्तव्य आ अधिकारमे संतुलन स्थापित नहि भऽ रहल अछि जाहि कारणेँ बहुजन समाज अपमानित भऽ रहल अछि। अधिकार आ कर्त्तव्यक समस्या समस्त संसारमे अछि।

आइ नव युगक नवीनताक क्रान्तिमे हम्मर प्राकृतिक सम्पदा आ वन्य जीवक उपेक्षा भऽ रहल अछि से अप्पन देशक लेल तँ नीक नहियेँ अछि जे संसारोक लेल ई चिन्ताक विषय बनि गेल अछि। तथापि हम आशान्वित छी-

“हम मिथिला वासी आशावादी
सभ दिन रहलौं आ आइयो छी।
किछु बीछै छी किछु बीछ-बीछ
कोठीक कान्हपर रखने छी।

किछु बीछ कऽ हार बनौने छी
ओएह हम्मर कविता छी।

मोती बीछ-बीछ हार गुथवामे
हमरा केतेक सफलता भेटल।

से तँ एहि बातपर निर्भर अछि जे

ई हार पाठक लोकनिकेँ केहेन लगलनि

हम गुनगुनाइ छी, लिखै छी

आ आशान्वित भऽ जीबै छी।”

प्रेरणाक स्रोत हम्मर मैथिल प्रेमी, समस्त मैथिली भाषी आ पाठक लोकनिकेँ समर्पित। निवेदन जे पोथी पढ़लाक बाद अप्पन प्रतिक्रिया आ अप्पन विचारसँ अवगत कराबी।

सधन्यवाद..

- झौली पासवान

अनुक्रम

नजरि लागल छै/17
ओ भेल बुढ़/19
अगराहीक घनछोहा/20
साँचमे ई लपेटल झूठ/21
अप्पन हाथ ई जगन्नाथ/22
लहरल धधरा/24
सुनू भाय जनता/25
साक्षी/27
माटिक पुकार सुनू/28
निस्तेज/30
कड़ी/31
अप्पन देशक माटि पानि/33
हम मधुकर मधुबनी छी/34
सहगामी/36
कहू नाओं केकर हम?/37
कानू कोना/39
स्वीकार करू वरदान/40
फाटल जिनगी/42
गुरगुट काका/43
बस! नाओं ओहने हो हमर/45

अस्त-व्यस्त जन जीवन/47
श्वेत क्रान्ति/48
शक्ति हमर/50
खोललैन नजैरिया/51
माटिक सुगन्ध/53
सिकहर टूटल/54
फेरो जाइ छी पंजाब/56
नव विहान/57
पूण्य भरल आनन्दसँ/59
भावी जननायाक/60
परलोक धरि/61
दिन दुपहरिया/63
रींग मास्टर/64
अप्पन भाषा/66
मामी/67
मौसी/69
बुलकी वाली/70
जीवनक अभियानसँ/72
गुजारा भत्ता/74
बिहारक कुसियार/76
जीयब सम्मानसँ/78
नवतुरिया/80

झूठक थोपड़ी/82
फुलझरिया/84
ढिठगर नेन्ना/87
डोलल इमान/89
संविधान/91
बटुआ/92
प्रकृतिक पूजा/94
ऊपर जमीनसँ/96
चोंचा/97
प्रेमक पांती/100
कच्छर/102
गुण गहवर/104
बड़की काकी/105
सम्यक विचार/107
फगुआक रंग/109
प्रेमक पुरिया/110
बरखा/112
स्वार्थक मोटरी/113
कत्तऽ चलल/114
बसन्तक आगमन/116
घराड़ी बन्हकी/118

नजरि लागल छै

नजरि लागल छै
असह्य गर्मी प्रचण्ड ज्वाला
डोलए ने पात, छल गुम बसात।
बिजुरियो गुम भऽ गेल छल
आँखियो ने मूनि सकलौं ।

राति भरि ताड़क पंखा डोलबैत रहलौं
सेहो हवा गरमे देह के झुलसाबै छल।
कछमछी लागल छल हमरा
घामसँ भीजल छेलौं तर-ब-तर।
टाहि आएल आँगनसँ
मन हम्मर काँपि उठल।
अनिष्ठक आशंकासँ,
तलमलाइते आँगन गेलौं।

हकरैत छल प्रतिभाक नेन्ना
ओहो घामसँ तर-ब-तर छल।
भुलेबाक बहुतो प्रयास केलौं
किएक मुँहमे सपटियो लेत।

प्रयास केलौं अस्पताल जेबाक,
मुदा एक्कोटा सवारी नहि भेटल।

मन तँ हम्मर दगध भऽ गेल
बच्चा दूधो नहि पिबैत छल।

एक टा सुआसिन कहलैन
देखनहुक बच्चा छै
एकरा ककरो नजरि लागल छै
बुलाकी ककासँ देखा दियौ
गेलौं बुलाकी काका ओतए
मुदा ओहो गाम गेल छल।
नेन्नाकेँ घरे आपस अनलौं
तखने बिजुरी पंखा नाचए लागल।

रसे-रसे बच्चा दूध पीबए लागल
थोरबे कालमे बच्चा फोंफ काटए लागल
हम्मर तँ सूप सनक करेजा भेल
नीके भेल जे बुलाकी काका गाम चलि गेल। ❑

ओ भेल बुढ़

टप-टप चुबए छप्पर छान्ही
पानि बहए ओरियानीमे।
माटिक घर सलकैए हम्मर
रुपना सुतल पलानीमे।
सुनए ने एक्को बात हमर ओ
दिन भरि गुरियातानीमे।
एकसर उपछी पानि घरसँ
ओ अछि पड़ल पलानीमे
उठिते देखलौं हम पुछऐत मे
ओंघराएल मोटका धमना साँप
देह सरद भेल डरसँ हम्मर
मुहसँ निकलल बाप रौ बाप।
ताबर-तोर कोरैला कानए
लोक सभक ओ बात अकानए।
जँ ई धमना घर चलि गेल
तखन बुझू जुल्मे भऽ गेल।
पास पड़ोसक सभकियो दौड़ल
भागल धमना झाड़ीमे
तैयो रूपना पड़ले रहि गेल
ओ भेल बूढ़ जुवानीमे। ❑

अगराहीक घनछोहा

काज ने धन्धा व्यस्त रहै छैथ
बैस चौकपर गप्प लड़बै छैथ।
लवका-पुरना सभटा बात
सबहक पोटरी रखने साथ।

बात ओ मिसरी घोरल बजता,
राजनीतिसँ बोरल बजता।
गामक जेतेक छहरिया लप्पा
सभकियो सुनतैन हुनकर बात।

कतय भेलै केकरासँ झगड़ा।
किए भेलै केकरासँ झगड़ा।
आँगुरपर ओ कारण गनता
मध्यस्थताक जोगार ओ करता।

सभक बात ओ सभ सन कहता
नोनगर, तेलगर, चहटगर बात।
झूठक पोटरी खोलि बैसल छैथ
सांच ने एक्को बजता बात।
बात एमहुरका ओमहर कहता

अप्पन लाभहित तत्पर रहता।
धधराकेँ लहराबैत रहता
ओ अगराहीक धनछोहा। ❑

साँचमे ई लपेटल झूठ

गुप्त उष्माक समान घातक
साँचमे ई लपेटल झूठ
हेराएल जिनकर ज्ञानक गठरी
सभ दिन प्रभावित ओएह सपूत।
रहि गेल गाछ ठूठक ठूठ
नहि नव पल्लो आ नहि फूले।
सभ दिन सुनले बात सुनौता
नकलीकेँ असली कहबौता।
एक्का, दुक्का विवेकशील जे
तेकर बात बुझता फजूल ओ

जे जकड़ल ऐ मकड़ जालमे
आँखि मूनि करता सभ बात कबूल।

धर्मक पढ़ौता ककहरा
पाठ नहि सफल जिनगीक।
अंध विश्वासमे ठेलि

साँचपर करता परदा।
लुटए समाजकेँ खूब,
साँचमे ई लपेटल झूठ।

प्रश्रय मिलए उन्मादकेँ
जनघातक अछि कारण इएह।
अछि आइयो अभाव समाजमे
जे कहए दूधके दूध।

दिगभ्रमित कए रहल समाजकेँ
साँचमे ई लपेटल झूठ। ❑

अप्पन हाथ ई जगन्नाथ

केने रही डिहबारक कोबला
पान-सोपारी आ दूधक ढार।
केने रही कमला के कोबला
करिया पाठी के बलिदान।

बिफल भेल सभ कोबला-पाती
कानए बुचिया पीटय कपार।
टूटल बान्ह दहा गेल सभटा
माल-जाल कोठी, चिनबार

कतए गेल डिहबारक सतिया
महिमा कमला मैया केर
कतए नुकेला घरक गोरैया
बँचा नहि सकला बौआकेँ।

भुकुर-भुकुर कानए बुचिया
सभ दिन उठि अधिरतियामे
देखा-देखी दिन काटए बुचिया
राति बिताएब लागए पहाड़।

भावेसँ भगवान विधाता
बढ़ए आत्मबलक भण्डार।
अप्पन हाथ ई जगन्नाथ अछि
हुअए ईहो भावक सँचार।

नदी, नाला, बान्हकसँरक्षणमे
सजग रही हमहूँ जनता।
सही क्रियान्वयन योजनाक हो
जानब हमरो अछि अधिकार। ❑

लहरल धधरा

बेटा तोहर छौ बड़ खुरलुच्ची
लगा देलक एकरा उरकुस्सी
गरजैत आएल रूपनीक माए
पाछू-पाछू रूपनीक भाय

नहि गरजू यै बड़की दीदी
नहि करू अहाँ मुँहाँ- ठुठ्ठी
तोडिं देलक बकरीक टांग
बेटा अहूँक अछि बड्ड शैतान

बात बातमे हल्ला भेल
हल्लाक बात मोहल्ला गेल
चढ़ा उतरीक बात करए सभ
भीड़ जुंटल अछि देखबाक लेल।

दौड़ल एली बड़की काकी
लागल सबहक मुँहपर टाटी
बच्चा झगरल सभ अबोध छल
अहाँ सडकपर नाच करू

सभ बच्चा एक सँगहि खेलत
झगड़त-झगड़त आ फेर मेल करत

झगड़ब अहाँसभ देखत तमेशा
ऐ बातक एहसास करू

काकीक बात असरि कऽ गेल
दुनू दियादनिक सिर झुकि गेल
दूनू दियादिन घर चलि गेली
लहरल धधरा झट बुझि गेल। ❑

सुनू भाय जनता

सुनू भाय जनता
सुनाबै छी बात यौ
विश्वासेमे होइत आएल
सभ दिनसँ घात यौ।

चुनबामे नेता अहाँ
सभ दिन खेलौं धोखा
देश भेल आजाद
अहाँ रहलौं गुलाम यौ

नेता बनल नटुआ
नमहर ओक्कर बटुआ

नहि भरि सकलै आइ धरि
ओक्कर नमहर बटुआ

तकैत रहू टुकुर-टुकुर
निहारैत रहू बटुआ
अहींक बनाओल घर
अहीं रहू कात यौ

आइ फूसि बाजि-बाजि
नेता नेहाल भेल।
खटैत दिन-राति एतए
जनता बेहाल यौ। ❑

साक्षी

अग्निदेव आ पंचपरमेश्वर,
साक्षी बनल परम्पराक।
भक्तिपूर्वक गेल अरोधल
कुलदेवी आ कुलदेवता।

उल्लसित दम्पत्ति भेल
बन्हाएल परिणय सूत्रमे।

छह मास, साल, दू-साल बीतल
संतान प्राप्तिक इच्छा जागल।
सास, ननदि आ दियादिन सभ
बाँझिन कहि उलहन देबए लागल।
झहरए दुल्हिनकेँ नोर
लागए देब पितरकेँ गोड़।

आनन जेकर, आँगन जेकर
जीवन जेकर सुनसान छल।
केलक अनेको कोबलापाती
बन्न हमर आँचर खुलए।

भेल पुष्पित अभिलाषा
सन्तान आएल कोरमे।

बीतल साल, दुइ साल,
दोसर सन्तान आएल कोखिमे।
माए भेली निष्ठुर केहेन
भ्रूणक जाँच कराबए कोखिमे।
कोरमे देखि एक सन्तान
दोसरकेँ जान मारए कोखिमे। ❑

माटिक पुकार सुनू

हे ज्ञान दिवाकर! ज्योतिपुंज
जगमग सकल जहान,
अहीं केर ज्योतिपूंजसँ
तेयौ आँगन अप्पन अन्हार
कहू! ई नहि कलंक अछि?

देशक सीमा पार, अपन सम्पर्क बनल अछि
तेयौ निज आँगन किएक सम्पर्क रहित अछि।
लाखो बचपन लेटा रहल अछि धूलमे
जेकर उमेर आखर सिखबाक स्कूल मे
कहू! ई नहि कलंक अछि?

जे कटल शिक्षाक मुख्यधारासँ
जकड़ल जे अंध्विश्वासमे।
श्रद्धा आ विश्वास जगा कऽ
जन-जनमे आखरक ज्ञान भरू।

मिथिलाक माटिक पुकार सुनू।
ई काज कठिन से जानि लिअऽ।
तेँ हारि ने कखनो मानि लिअऽ
जन-जन के दिल जोड़ि-जोड़ि,
सूतल समाजकेँ जागृत करू।
मिथिलाक माटिक पुकार सुनू।

सम्पर्क क्रांति, स्वरसँगमक
संयुक्त राह सभ मिलि धरू
चाही मिथिलाक विकास तँ
जागू मैथिल, जगाऊ मिथिलाकेँ। ❑

निस्तेज

अस्त भय रहल अछि सूराज
निस्तेज भय रहल अछि सूरज।
बदैल रहल अछि दिशा अप्पन
थाकि गेल आऽ अलसिगेल राही जकाँ।

जकरा प्रति जनमानसमे
प्रतीक्षाक भाव छल।
जकरा प्रति जनमानसमे
तिरस्कारक भाव छल।

मुदा आब ओ ने प्रतिक्षित अछि
आ ने ओ तिरस्कृते अछि
जनाकांक्षा पूर्ण भय गलैक
आब ई ओकर विदाइक समय अछि।

तहिना मनुक्खोक उदय आ
अस्त होइत अछि
अन्तमे ओहो ने प्रतीक्षित
आने तिरस्कृत रहैत अछि।

आजुक अस्त सूर्यक उदय,
काल्हि निश्चिते होएत।

मुदा देहावसानक बाद मनुक्खक
धरतीपर आएब कल्पने टा अछि। ❑

कड़ी

दू टा कड़ीसँसारमे
कर्तव्य आ अधिकारक।
गूँज अछिसँसारमे
अधिकार आ कर्तव्यक।

केवल भारतक बात नहि
भ्रम अछि समस्तसँसारमे।

प्रबल ओ कर्तव्य अछि
जे दिया सकए अधिकार
जँ हनन आधिकारक तँ
प्रबल राह अछिसँघर्षक।

मुदा कर्तव्य अछि गौन
सभ ठाम अधिकारक खोजमे।

लड़ब अन्यायसँ आ
लड़ब भ्रष्टाचारसँ।

खेल नहि गुड़ियाक ई
अनायासहि सुलझत बात

होएत सँतुलन जखने
कर्तव्य आ अधिकार मे
कर्तव्य आ अधिकार दुनूक
बद्तर हालतसँसारमे।
दुन्नू अटकल दू कातमे
मानव फंसल मजधार मे
दुन्नू कड़ी अछि धुमिल आइ
अर्थ लोलुपताक प्रभावमे। ❑

अप्पन देशक माटि पानि

अप्पन देशक माटि पानि
आ अप्पन देशक धूप।
अप्पन देशक गुड्डा- गुड़िया
दोसर ठाम अनूप।

नोन, तेल आ सुक्खल रोटी
कचका चूड़ा लव कुट्टू।
शाकाहार तिलकोर अनुट्ठा
मांसाहार माछ मरवाकझोर।

नीक-नीक साबुनक जे शेखी
ओइसँ चिक्कन चिकनीमाटि।
कोका-कोला फैंटासँ बेशी
रुचगर पुदीनाक शरबत ठंडा।

बाध बोनक बथुआ साग
जलधारक तिनपत्ती साग
बहुतो तीमनसँ रुचगर
आ सेहतमंद सरिसोक साग।

मेटाएल भूख जगाबए बला
गुम्माक साग बारी-झाड़ी।

आँखिक ज्योति बढ़बएबला
सहजन तिलकोरक साग।

देखब रूप सजाओल सबहक
बहु विधिसँ परदेशमे
बिना सजौने छौड़ा- छौड़ी
अपना ओतए अनूप। ❑

हम मधुकर मधुबनी छी

हम मधुकर मधुबनी छी
चारि अक्षरक नाओं हम्मर
मैथिल छी मैथिली हम्मर
मिठगर एहेन भाषा नहि आन।

मर्यादासँ बान्हल हम्मर
सभ बात आओर व्यवहार।

अतिथि होइछ भगवान एतए,
दृष्टांत तेकर नहि कोनो ठाम।
मुद्दतिसँ विख्यात एतुक्का
माछ, मखान आ पान।

मिथिला पेटिंग के यश देखू
आइ छूबि रहल असमान।

नहि मात्रहि अप्पन देशमे
अछि चर्चित आइ विदेशोमे
इटली, जर्मन आ फ्रांसमे
भए रहल यशक गुणगान।

होइछ अहर्निश प्रकृति पूजा
सबहक आँगन तुलसी चौड़ा।

पीपड़क गाछ दलानक आगू
बड़ आओर नीमक पूजा।
हरियर अशोकक गाछ
बढ़ाबए गामक शोभा
प्रकृतिक आँचरमे बसल
हम मधुकर मधुबनी छी। ❑

सहगामी

खोजै छी दिन-राति हम
स्थान खेलबाक आ
प्रौद्योगिक संस्थान खोलबाक
मुदा ध्यान नहि ओमहर हमर

जे जीवनक आधार हम्मर
आ सहगामी युग-युगसँ

जल जीव, थलजीव आ
बहुत रास नभचर हम्मर
अछि ओझल हमरा नजरिसँ
नव युगक नवीनताक क्रान्तिमे

माछ तँ प्रसिद्ध अछि मिथिलाक
मुदा ओ देशी माछ कत्तऽ गेल?

सिंगही, मांगुर आ भुनचट्टी
दरही नजरिसँ ओझल भेल।
आबि गेल गरांस काट आब
ढलइ मिथिलासँ कत्तऽ गेल?

वन्य जीव बोन गदहा आ
लील गाए कत्तऽ गेल?

ख़ुश छी जे ध्यान देलक सरकार
जलाशय, पोखरि-झाँखरिपर
जे जल जीवनक आधार अछि
तैयो छी आइ सकेतमे।
नहि नजरि अबैत अछि चारागाह कत्तौ
आ मवेशियो घरेमे दुबकल अछि। ❑

कहू नाओं केकर हम?

केतेक दिन धरि सीबैत रहू!
ई फाटल गुदरी हम।
लए गेल चोर चुनरी
कहू नाओं केकर हम।

खत्तामे देलक हत्ता
ओ भरलक चभच्चा।
मनुक्खक भेल कुच्चर
तेँ धार भेल उत्थड़।

उपला जाइत अछि कनियेंमे
नामी गामी धार सभ

बगल के गाम घर सभ
भसिया जाइत अछि बाढ़ि मे

योजना परियोजना मे
ग्राम सड़क योजनामे
ढ़ेरो लगैत अछि लागत
मुदा नहि हिफाजत।

केतेक दिन धरि जीबैत रहू!
विपतल ई जिनगी हम
सभ ठाम नफाखोरी
कहू नाओं केकर हम। ❑

कानू कोना

कानू कोना अछि नोर सुखल
अतीत कालसँ आइ धरि
ऐ पुरुष प्रधान देशमे
प्रताड़नासँ मन रूसल।
ममताक प्रतिमूर्ति रहितो
निश्छल व्यवहारक भूखल छी।

हमहूँ माएक कोखिसँ एलौं
अप्पन बड़का भाए जकाँ
मगर ओकर की देन समाजमे
हमरासँ ऊपर जकाँ।

धाक जमौने घरमे ओ
हम छी बिसुकल गाए जकाँ

हम दुख नहि सहि सकब, आब
केकरा कहब के सुनत हम्मर
उपकार नहि उपहास करत
जेकर आदी ई समाज अछि आदिसँ

केकरो ने कहब
केकरो ने कहब

ओकरा सजाबैत अछि
पीयर-पीयर फूलसँ
हमरा कनाबैत अछि
दहो बहो नोरसँ

फाटू हे धरती समा लिय गातमे
भुकुर-भुकुर कानै छी बिल्कुल एकातमे। ❑

स्वीकार करू वरदान

नहि चाही जे निर्भर रहू मात्र प्रकृतिपर
चाही जे स्वीकार करू वरदान एकर
नहि चाही जे पाछू रहू अहाँ कोनो देशसँ
वैज्ञानिक आ औद्यौगिक प्रगतिमे।

चाही जे अइ प्रकृतिसँ
वरदान लिअ यथासँभव।

बढ़ैत जनसंख्याक अनुपातमे
कृषि उपज बढ़एसे अछि जरूरी।
नव तकनीकक प्रयोग हो यथासंभव
यथा समय से अछि जरूरी।

रसयानिक प्रयोगक बारंबारता बन्न करू
अप्पन माटिकेँ प्रदुषित हेबासँ बँचाउ।

रसायनिक खादक प्रयोगसँ
साँचे बढ़ैत अछि कृषि उपज
परञ्च क्रमागत ह्रास होइछ
जमीनक उर्वरा शक्तिमे।
बँचाउ अप्पन जमीनकेँ उस्सर हेबासँ
अप्पन जमीनमे जैविक खादक प्रयोग करू
सोचैथ एकरा आम जनता
सोचैथ ई सरकार अप्पन
हो गहन चिन्तन मनन
अछि एक्कर दरकार।
प्रश्रय मिलय कृषिक सँग पशुपालनोकेँ
आ एकर सम्यक उपाय हुअए। ❑

फाटल जिनगी

हम पढ़लौं-लिखलौं
मुदा किछु ने केलौं
फाटल ई जिनगी
सीबैत रहै छी।

सभ भांजि रहल सोंटा
बान्हि मजगूत लंगोटा।
बिना पेन्दिक हम लोटा
ओंघराइत रहै छी।

आइ लाख, दस बीस लाख
भऽ गेल अछि आम बात।
दुइये-चारि हजारमे
हम मस्त रहै छी।

मिलल कोनो श्रोतसँ
सै-दू सै टाका
ओहीसँ दिनभरि पैतरा
बदलैत रहै छी।

अछि समाजमे विषमता
आ हमहूँ विषम छी।

तैयो समताक गीत
हम गुनगुनाइत रहै छी।

कियो लैत अछि चुटकी
कियो तानए भृकुटी।
तेकर ने कोनो गम
दनदनाइत रहै छी। ❑

गुरगुट काका

गुरगुट काका, मारए ठहाका
फगुनीक आँखिसँ झहरए नोर।
चुल्हा बन्न भेलै भुखनीकेँ
मखनी धरे तरै तिलकोर।

घुमए ढलान घर-घर झगड़ा लगाबए
नीके-निकुत घर पाबए भोग
जितनी छितनी ढो-ढो मरैए
ओक्कर हिस्सा मिरचाइयक झोर

लुटए जमाना, लुटए खजाना
ओकरे सभ कियो लागए गोड़

दिन-राति खटितो पेटो ने भरलै
अमरुद चोरा लखना बनि गेल चोर।

रहल ने जाइत अछि तेँ पूछै छी
ई केहेन आजादी यौ
गुदरी लेल तरसैत अछि भुखनी
मीनाक चकमक साड़ी यौ

दस-साल, बीस सालकेँ के पुछैत अछि
सत्तर सालक आजादी यौ।
तैयो धीया औंठा छापे लगाबए
आठे बरसमे शादी यौ। ❑

बस! नाओं ओहने हो हमर

गुजरल मनुक्खक जे जमाना
ओकरे कही इतिहास हम
जे अमर नाम इतिहास मे
बस! नाओं ओहने हो हमर।
मनुक्खक बीच हमहूँ मनुक्ख
हम जीवी मनुज कल्याण हित
आदर के भुक्खल रही हम
आदर करी इंसानकेँ।
सदाचारक अदला-बदली
हम करी समस्तसँसारमे।

निज बतनहित जीबी मरी
गददारसँ सदिखन लड़ी।
जे राहमे भटकल राही
हम पथ प्रदर्शक ओक्कर बनी
जै खूनसँ पलली, बढ़ली
ओइ जननीकेँ हर्षित करी।

स्नेह भरल माताक आँचर
कखनहु कलंकित नहि करी।
जीयब हम मात्रहि सात दिन

आ मरि जाएब दिन साते
आठम ने कोनो दिन आएल
नहि भूत, भविष्य आ वर्तमाने।
जीबी जहिया धरि जहिया मरी
जननीक प्रायोजनसँ मरी।
मातृ सेवकक रूपमे गनती
हो हम्मरसँसारमे
जननीक उज्जर दूध सन
हो आचरण उज्जर हमर।
सभ दिन रहए इजोत
इतिहासक एहेन हम अंश बनी। ❑

अस्त-व्यस्त जन जीवन

अविरल जलधार बहए भू-पर
नहि रूकि रहल वर्षा नभसँ
जन-जीवन भेल अस्त-व्यस्त
सबहक हिम्मति भेल पस्त।

लोकक टूटल सम्पर्क लोकसँ
गाम, मोहल्ला आ शहरसँ
व्याकुल नयन कुम्लहा रहल
बूढ़ जुआन सभ भेल त्रस्त।

संसाधनक तँ बाते कोन
बहुतो जिनगी जलमे बहल।
जे बाँचि गेल से मरि रहल
व्याकुल ओ भूख प्याससँ

हुकरि-हुकरि पशुधन मरए
बिलखि-बिलखि कानए नेन्ना।
बिगरल सबहक भाल
आएल बाढ़ि एहेन विकराल।

पर्याप्त नहि राशन-किराशन
जे बँटि रहल सरकारसँ।

गिरए लोकपर लोक
राशन वितरन कालमे

हेलीकॉप्टर उड़ैत देखि
दौड़ल ओम्हरे सभ नर-नारि
प्रसव वेदनासँ कराहि रहल
सुधियाक मझली भौजाइ। ❑

श्वेत क्रान्ति

भोरे भोर उखारए रतनी
धनियाँ कुसियारक खेतमे।
हर्षित मोनसँ कोरए बचनी
आलू कुसियारक खेतमे
दोहन फसिल रतनी-बचनी केर,
चर्चित अछि दस कोसमे।
लहराइत मसुरीक फसिलमे
फुला रहल छै सरिसो पीयर।
देखय तमेशा राहगीर सभ
रतनी-बचनी केर खेतमे
लाल टमाटर आओर कदीमा
ओंघराएल छै खेतमे

दूधक धार बहाबए रतनी
बेचनी अप्पन परिवारमे
गोबर गोंत के लक्ष्मी बुझए
पटवय अप्पन खेत मे
बेचि-बिकिन खेतक फसिलकेँ
करए प्रचूर पैसाक उगाही।
स्वेत क्रांति केर दुनू समर्थक
भरि घर पोषय माल-मवेशी।
जैविक खाद पटाबए खेतमे
नहि रसायनिक बेसी।
तेँ खेत ओकर हरियर कंचन
खेतक उपज अछि बेसी
जागू हमर किसान भाय
रसायनिकपर निर्भरता छोडू
पोसू माल-मवेशी घर भरि
आ जमीन जोतू-कोडू

दूध, दही भरपूर खाऊ
आ सुखमय जीवन जीबू। ❑

शक्ति हमर

नहि बौआ छी अहाँ बाप हमर
गुरुवर छी अहीं महान हमर
जीवन हमर संताप भरल
सभ अहीं हरबसँताप हमर।

केतबो दुखी रहै छी हम
मुसकै छी देखि मुस्कान अहाँक।
केतबो रहै छी थाकल हम
लय कोर, दलान ठूमकै छी हम।

अहाँ नहि बुच्ची, छी शक्ति हमर
करए भक्ति सकल सँसार जेकर
केतबो घरमे लहरल धधरा
अहाँ आगिमे पानि बहा दई छी।

नहि बौआ छी भगवान हमर
जीवनक सभटा आनन्द हमर
केतबो खग्गल लखि रूप अहाँक
सभ खगता दूर करै छी हम।

देखि मोनक उद्गार अहाँक
उद्गार जगए हमरो मनमे

सुनि आँगन किलकारी अहाँक
हमहूँ किलकै छी बचपनमे। ❑

खोललैन नजैरिया

हमरे हाथक मेहनतिसँ
गगन के चूमय बंगला
कोइ चिबाबय पान बरफी

कै ले हम्मर हिस्सा टुटली मरैया
हे पेटोमे लागए करती।

हमरे ताना, हमरे भरनी
हमरे कातल सूत
कोइ झमकाबय चिक्कन चुनरी

कै ले हम्मर जिनगी एतेक परेशान
हे बदनपर फाटल गुदरी।

चुनि-चुनि घास-पात के
कागज बनेलियै
हे कलमियाँ निरझरनी

कैले हम्मर बेटी रहलै औंठा छाप
हे जमाना बुझए फूहरी।
कद्दन-मद्दन खा कऽ
अप्पन जिनगी बितेबै
हे पहिरि कऽ रहबै गुदरी।
दैबा हमहूँ नहि लगेबै औंठा छाप
हे पढ़ेबै बेटी सुनरी।
सांचे कहलैन झौली भैया
खोललैन नजैरिया
हे पढ़ाएब बेटी सुनरी।
पढ़ि कऽ बेटी लेत ई अप्पन अधिकार
हे खुशी मन खेलब झुमरी। ❑

माटिक सुगन्ध

आबू भाय! बहिन सभ आऊ
सँग सखा, सहगामी लाऊ
मिथिला माटिक सुगन्ध
अहाँकेँ बजा रहल अछि

स्वर्गहुसँ सुन्दर धाम
अहाँकेँ बजा रहल अछि।

बजा रहल अछि मिथिलाक
सघन हरियर फूलबारी
माछ मखानसँ भरल
जलाशय बारी- झाड़ी।

मीठगर लिच्ची आ आम
अहाँकेँ बजा रहल अछि।

कवि कोकिल विद्यापतिक गाम
स्वर्गहुँसँ सुन्दर।
पैंटिंगमे विश्व विख्यात
पद्म श्री महासुन्दरी।
यौ जनक विदेहक गाम
अहाँकेँ बजा रहल अछि।

महमह महुआ मीठ
चहटगर बड़ तिलकोर
धन्य ई धरती जकरा
लागए देवतो गोड़
दीना भद्री आ भवानिक गाम
अहाँकेँ बजा रहल अछि। ❑

सिकहर टूटल

खेलक नहि पीलक
आ सुति रहल नेन्ना
निन्ने ओक्कर बैरिन भेल।
भनसोक बेरक करनिनियाँ भेल
दिन तका कऽ भानस करती
छोटकी कनियाँ बड्ड सुकमारि।
एक्खन धरि भानस नहि भेल
नेन्ना, भुटका सभ सूति गेल।
छोड़लक नहि कोरैला हमरा
झौहरि केलक साँझो-साँझ
आएल विलम्बसँ तीमन-छाजन
घरमे हमहीं छी बदनाम।
देली टोकारा बड़की कनियाँ

सांच कहै छैथ छोटकी कनियाँ
लड़िकोरीकेँ लड़िक छोड़त
तखने ने ओ काज करत।
चुप्प रहू यै साहरवाली
बुझलौं केतेक सुपातर छी
मुँह लगबैत अछि छोटकी कनियाँ
अहूँ बनल छी ओकरे गोंधियां।

बाते-बात बतँगर भेल
सासु पुतहुमे खटपट भेल।
कानए लगली बड़की काकी
सबहक भोजन दुर्लभ भेल।

रुसि रहली बड़की काकी
दशा ने रहलैन एक्को बाँकी।
कुक्कुरक भागे सिकहर टूटल
सभटा भोजन नादिमे गेल। ❑

फेरो जाइ छी पंजाब

रौ मारल गेलौं भजार
बिका गेल लोटा थाड़ी।
रौ टंगरी टूटि गेल यार
दौड़ेत दफ्तर सरकारी।
पुछत के हम्मर हाल
बिका गेल लोटा-थारी।
वाह नरेगा! हमर नरेगा
टाल ठोकइ सरकार
नहि मिललई सभकेँ मजदूरी
अबला काटई बबाल।
रौ छाल्ही काटई दलाल
बिका गेल लोटा थारी।

पेट आ पाँजर एक भेल छै
हकन कनई छै हकरी रौ
मुखिया जी के दरबज्जापर
चना चिबाबै बकरी रौ।

रौ देखल ने जाइत अछि यार
बिका गेल लोटा थारी।

हाय गरीबी के झकझोरल
जिनगी हमर उधारी रौ
आबो नहि चेतब तँ हम्मर
बन्हकी पड़त घरारी रौ

फेरो जाइ छी पंजाब
बिका गेल लोटा थारी। ❑

नव विहान

नव विहान लय आएल सूरज
शुभ रात्रि लय चान ई
सूरज सिखाबए काज आ
विश्राम कराबए चान ई।
ई दुन्नू कुदरती शान
दुन्नू जीवन दाता भगवान।
काननमे सूतल सूर्यमुखी
सिमटि गात छल अलसाएल।
जे छल चेतनाहीन भेल
नुकाएल पुष्पक गातमे
जागल भ्रमरकेँ चेतना

लखि लाल किरण ओ भागल।
जगा रहल कौआ बौआ के
जागू यौ बौआ भोर भेल।
देखू चटिया सभ विदा भेल
पीठपर लादि बस्ता स्कूल।

माइक कोरमे दुबकल नेन्ना
काकक स्वर सुनि जागल।
लागल जन-जीवन काजमे
सभ अप्पन-अप्पन रागमे।
रसे-रसे सूरज दादा
पश्चिम दिशामे ससरल।
काज सिखा कऽ गेल सूरज
विश्राम कराबए आएल चान।
भेल अन्हार थमि गेल जिनगी
नभमे हंसिते आएल चान
बांटि रहल शीतलता चान
जन-जन करए विश्राम।
जन-जन शिथिल आगोशमे
भीजल निशाँ ई ओसमे। ❑

पूण्य भरल आनन्दसँ

धर्म, पाप आ पूण्यक
मर्म न जानए कोय।
धर्मक गठरी बान्हि चलय
पाप बटोरए सोय।

धर्म जगाबए जातिकेँ
ऊँच-नीच व्यवहार।
पूण्य अजाति अनंत धरि
स्थापित जातिक नाओं बिसारि।

मानव-मानवसँ प्रेम करए
ई मानवक थिक धर्म असल।
जाति जगाबए अहंकार
इंसान दुविधामे फंसल।

धर्म वंशसँ बान्हल परम्परा
पूण्य जन कल्याणसँ।
धर्म भरल सुखसँ मगर
पूण्य भरल आनन्दसँ। ❑

भावी जननायाक

जुनि देखू सपना रातिमे
द्योतक अधनिनियाँक ई
कर्मठ बनू दिन भरि देखू
सदकर्मक सपना अहाँ।

छी चित्र अहीं, चित्रकार अहीं
जन जीवनक आधार अहीं।

अहाँ नौजवान जग के आशा
स्वर हीनक अहीं एकल भाषा
उठू! माटिक चानन करू
नव पीढ़ीहित आदर्श बनू।

स्वागत करत आभा आदित्यक
पथ प्रसस्त होएत सबहक।

कर्मक बलसँ काल भागत
मनमे आत्म विश्वास जागत
बनब प्रेरणाक श्रोत जगतमे
अधिकारक सभ राह लौकत।

प्रकृतिक अनुपम उपहार जिनगी
आशासँ गूथल हार ई जिनगी।

जुनि जीबू भाव निराशसँ
जीबू पल-पल नव आशसँ
अमृतसँ भरल फुहार जिनगी
जुनि जीबू सूति उधार जिनगी।

कर्महीन लाचार जिनगी
कर्मशील उपहार जिनगी। ❑

परलोक धरि

चाहै छी जे किछु लिखी
पढ़ब लिखब किछु सीखी।
सोची, समझी, खींची लकीर
मिल जाए जे ओइ ठौरसँ

जतए बसावट उजरल अपटल
माटिमे सानल जिनगी जिनकर

जे जाथि खेतमे होइत भोर
दिनभरि काज करथि चाँचरमे
छुच्छ-रुक्ख साथे लऽ जाकऽ
भोजन करथि जे जंगलमे

कनिएमेसँतोष जिनका
जे करथि जंगलमे मंगल।

खीच रहल छथि जे लकीर
इहलोकसँ परलोक धरि
जे करैत छथि सेवा सबहक
जंगलसँ गाम आ शहर धरि।

चाहै छी जे चूमि ली हम
चरण ओइ विश्वकर्माक।

धन्य! धन्य!! ओ देवता
धन्य! धन्य मेहनत हुनकर
नहि चानन आ नहि रोली
आ नहि सुगंधिक भस्म।

चाहै छी जे तिलक करी हम
हुनकर चरणक धूलसँ। ❑

दिन दुपहरिया

दिन दुपहरिया लह लह लहकए
देखि जिया मोर धक धक धड़कए
बाधसँ माल मवेशी भागल
गाछक निच्चाँ कुक्कुर हकमए।

मोर सजना छत चौतल्ला
ठकाठक काँटी ठोकए।

व्याकुल बाबू घर मुनहरमे
बैसले आगि लागल छनितनमे
ऐ घरसँ ओइ घर जाइथ
पीबैथ क्षण-क्षण फ्रीजक पानि।

मोर सजना के सूर्ये छतरी
गटागट पीबैथ पसीना।

माथपर नाचैन पंखा धर-धर
बाधा भेलापर काँपैथ थर-थर
हौंकए लागनि पंखा मुँहपर।
सेवामे लागल नोकर चाकर।

मोर सजना के पुरबा-पछिया
सटासट सेकए बदनकेँ।

मोर सजनाक गढ़ल
दू तल्ला चौतल्ला
जे चुमए शहर (के) आ
मोहल्ला- मोहल्ला

मोर सजना के टुटली मरैया
बुन्द टपाटप टपकए। ❑

रींग मास्टर

बाजए टनाटन
बजाबए टनाटन
चलय ई दनादन
चलाबए दनादन।

रींग मास्टर बजककर
रींग मास्टर घुमक्कड़।

नाचय जगत भरि
नचाबए जगतकेँ
केकरो करय दण्डित
आ केकरो पुरस्कृत।

शासक ई रींग मास्टर
नर्तक ई रींग मास्टर।

हाँ-मे-हाँ मिलबाबय
जे जी चाहए करबाबए
जागए और जगाबए
चलय स्वयं आ चलबाबए।

गतिशील रींग मास्टर
प्रगतिशील रींग मास्टर।

चलि सकए ने काज कोनो
बिनु एकरा जिनगीमे
चलि सकए नहि नाओं केकरो
बिनु एकरा जिनगीमे।

दुनियाक गरम बजारमे
महान रींग मास्टर। ❑

अप्पन भाषा

नोनगर, तेलगर आओर चहटगर।
अप्पन भाषा ई मैथिली।
बिगरल मोनमे मिसरी धोरय
अप्पन भाषा ई मैथिली।

माइक ममता घोरल अइमे
मिठगर माइक दूध जकाँ
नेन्नो करय विचार मैथिलीमे
ढिठगर कोनो विद्वान जकाँ।

भूलब कोना हम माइक ममता
अपनहि माइक कोरमे।
हम कृतघ्न नहि कृतज्ञ छी
अप्पन भाषाक मर्मज्ञ छी।

भैयारीक भाव बढ़ाबए बला
अप्पन भाषा ई मैथिली
टूटल भाव जगाबए बला
अप्पन भाषा ई मैथिली

जागू मैथिल जगाऊ मैथिलीकेँ
भावनाक तार मजगूत करू

सरल, सूपट आ हृदयग्राही
अप्पन भाषा ई मैथिली। ❑

मामी

चल रौ बौआ रपटल चल
सौंसे गाम मचल हलचल।
सँग लगौने नेन्ना भूटका
संगतुरिया रपटौने चल।

पाँचे दिनक करारपर
मामी एलौं कारपर।

सौंसे गाममे चहल-पहल
आइ मामी के छौ रंग जमल।
घर भरल छौ नव कनियाँसँ
मेला लागल दलानपर।

पाँचे दिनक करारपर
मामी एलौं कारपर।

मामी घरे ठहाका
मारौ, मामा मुँह बीचकौने छौ।

चानी काटि रहल छौ मामी
आँगन सभा लगौने छौ।
पितिया के कटहंस्सी लागौ
मारौ ताली तालपर

पाँचे दिनक करारपर
मामी एलौं कारपर।

गीत गायिनी गामक कनियाँ
मामा तोहर बनल बजनियाँ।
मामा बजा रहल हरमुनियाँ
मामी नाचौ तालपर। ❑

मौसी

कीनब बेसाहब की?
आब मेला देखब की?
नहि बनल जतरा
हम भुकुर-भुकुर कानी
मेलामे मौसी हेरेलो गे नानी।

रेड़म-रेड़ा पीसम-पीस
भीड़ अबै छल हमरे दिस
भीड़सँ निकलै ले गे नानी
होइ छल खीचा तानी
आसमानमे डंका बाजल
बरसए लागल पानी
मेलामे मौसी हेरेलो गे नानी।

छुटल हाथ चिकैरते रहलौं
मौसीकेँ कत्तऊ नहि देखलौं।
लवका सूढ़ लेरहाएल हम्मर
गिर गेल कत्तऊ रुनझुन पायल
मेलाक बाहर भेटल मौसी घेट जोडि हम कानी
मेलामे मौसी हेरेलो गे नानी।

घटना ऐ मेलाक गे नानी
मोन रहत हमरा जीवन भरि
भेंटल हमर हेराएल मौसी
हलसल-फूलसल नानी
मेलामे मौसी हेरेलो गे नानी। ❑

बुलकी वाली

गे झम झमियाँ ठहरि जो
दूर कत्तऊ जा अटकि जो।
घर-घर लागल बेनाठी झमियाँ
खत्ता- खुत्तीमे बहि जो

घर आँगनमे कादो-कादो
अखड़ि रहल सभकेँ ई भादो
समटि ले भाम्हर गे टिपटिपिया
पोखरि- झाखरिमे बहि जो।

सभ किसान काटय बपहारि
नजरि ने आबए खेतक आड़ि

सबहक डुबलइ बीहनि झमियाँ
उजरल घर बसौने जो।

गिर गेल हम्मर घर पुबरिया
भनसा घरमे फूटल दनारि
सहल ने जाइत अछि दुख बुनबुनियाँ
अप्पन जगह बदलने जो।

धाक जमौने राति अन्हरिया
हाथो हाथ सुझए ने बाट
सह सह करै छै साँप छुछुन्नर
ओकरोसँग बहौने जो।

धियापुता के उखलड़ल खांसी
तूँ लगबै छैं हमरा फाँसी।
नहि बन धाती बुलकी वाली
अप्पन धार समटने जो। ❑

जीवनक अभियानसँ

आगू-पाछू काल्हि हम्मर
छी बीच ठाढ़ हमशानसँ
अदम्य उत्साह मोनमे हमरा
जुड़ल छी जीवनक अभियानसँ।

पर्वतोंकेँ काटि-छाँटि
जीवनक राह बनाएब हम।

तूफान रस्ता की रोकत
ओ आएत आ चलि जाएत।
ओइ तूफ़ाँसँ यौवन की कम
पानिमे आगि लगाएब हम।

लड़ब उद्दंड तूफानसँ
नव इतिहास रचब हम।

अछि ऊँच हमर अरमान
करब हम ऊँच देशक नाओं
अप्पन मेहनतक बलसँ
जीवनकसँग्राम जीतब हम।

दुश्मनसँ कखनो नहि डरब
ओकरा तोड़ि राखब हम।

हमरे नाओं अछि वर्तमान
ई समस्तसँसार हम्मर।
उत्तर, दच्छिन, पूरब-पश्चिम
दुश्मनक घेरा तोरब हम।

हाथमे लऽ अप्पन तिरंगा
अम्बर धरि फाहराएब हम। ❑

गुजारा भत्ता

पिया रहल अछि गरल धराकेँ
अपना गरजे आइ किसान
सड़ि रहल अछि किडनी धराक
खाय रसायनिक खाद पोटाश।

माल मवेशी पोषय सभकियो
कहू कतय अछि गोबर खाद।

कटा रहल अछि गाछ दिन-राति
आ बढ़ि रहल माटिक क्षरण
विकल प्रदूषणक प्रभावसँ
विकलांग भऽ रहल पर्यावरण।

हरियर कानन भऽ रहल
सुनसान बियावान आइ।

देखल जाइत छल काल्हि जे पक्षी
आइ नजरिसँ ओझल भेल।
पर्यावरण प्रदूषणक प्रभावसँ
आइ लोकक जीवन बोझिल भेल।

सरकारी हो वा निजी
भरले रहैत अछि अस्पताल।

हरियर घास भऽ रहल पीयर
अल्प बसातसँ झरय पात गाछक।
आइ कुटिल सन हँसए सूरज
तपैत अछि अपनहि तापसँ

माँगि रहल अछि गुजारा भत्ता
आइ धरती आसमानसँ। ❑

बिहारक कुसियार

लपटल हरियर पातसँ
एक हाथपर दू-तीन गांठ
हाथियो खाइत अछि चावसँ
खिल जाइत अछि बाँछ ओक्कर

कुसियार अछि ई लाठी नहि
ई सरपतक छड़ी नहि।

नमहर! नमहर!! हरियर पात
पशुक उत्तम आहार ई
सुक्खल पत्ता गिरय खेतमे
उपयोगी फूसक घरमे ई।

हर्षित भऽ चुसए कुसियारकेँ
बच्चा, किशोर आ नौ जवान।

अही कुसियारक फसिलपर
निर्भर अछि चिन्नीक मील।
नगदी फसिल ई किसानक
खोलैत अछि आमदनिक राह।

नाओं एकर कुसियार बिहारमे
बंगाली कहए केताली एकरा।

टपकि पड़ैत अछि नोर आँखिसँ
चिन्नी मीलक अवशेष देखि।
बीतल दिनकेँ मोन पाड़य
चिन्नी मीलक अवशेष आइ।

आइ सवाली सभ किसान अछि
खाली अछि जेबी ओक्कर

कन्यदान, उपनैन, मुरनक
आधार कुसियारक फसिल छल।
हजारों मजदूरकेँ मिलैत छल
रोजगार चिन्नी मील सँ

किसान, मजदूर अछि खिन्न आइ
सभ चिन्नी मील अछि बन्न आइ। ❑

जीयब सम्मानसँ

नहि चाही ओ स्वर्ग हमरा
जे नजरिसँ ओझल अछि
चोर, लूटेरा शोषक मिलैत अछि
ऐ स्वर्गक कथित राहपर।

पोषक कम, शोषक घनेरो
मिलैत अछि ऐ राहपर।

अछि स्वर्ग कत्तऊ तँ देखा दिऐ
कियो स्वर्ग गेनिहार हमरा
अन्यथा नहि करय हमरा कियो
दिगभ्रमित ऐ राहपर।

भोजन, वस्त्र, आवासहित
शिक्षा आ रोजगार चाही।

नहि चाही मार्गदर्शन हमरा
सोझहि स्वर्ग जेबाक लेल
पथभ्रष्ट करैबला राह ई
धर्मक ठीकेदार सभक।

अन्याय के मेटेबाक लेल
आब धरतीपर क्रांति चाही।

अकर्मण्य हम नहि
छी कर्मशील हम।
कर्म करब हमशानसँ
जीयब हम सम्मान

समाजक बहुमुखी विकास हित
आब धरतीपर क्रांति चाही। ❑

नवतुरिया

एक डेग अहाँचली
एक डेग हम यौ
सुगम होएत राह कठिन
थकान होएत कम यौ।
थकान होएत कम यौ।

करैत चलू गप्प-सप्प
प्रेम बोरल चप-चप
सरल होएत काज कठिन
माथा-पच्ची कम यौ।
माथा-पच्ची कम यौ।

आहार-बिहारमेसँतुलन
आसँतुलन व्यव्हारमे
जी सकब सफल जिनगी
मन सदिखन हुलास यौ।
मन सदिखन हुलास यौ।

छोट-मोट बात लऽ कऽ
जुनि करी खट पट

पर निन्दा चुगलीसँ
सदिखन रहू कात यौ।
सदिखन रहू कात यौ।

जागू नवतुरिया आ जागू नवयुवती
देखू माइक खूब सूरती
डेगसँ डेग मिला कऽ बौआ
मैथिलीकेँ आगू लाऊ यौ।
मैथिलीकेँ आगू लाऊ यौ।

हम केकरोसँ कम की
जुनि एकसरे बमकी
अप्पन भाषाक विकासहित
अवाम के जगाऊ यौ।
अवाम के जगाऊ यौ। ❑

झूठक थोपड़ी

देखू जमाना केहेन बितैए
एक्के दिन सए दिन लगैए
पहिने डर छल भूत प्रेतसँ
आब लोकसँ लोक डेराइए।

कच्छप युग केर गेल जमाना
नव युगक नव ताना-बाना।
हेरा गेल सभ भाव-भंगिमा
नव युगक नव तानमे।

केकरोसँ कियो बात करत की
सभकियो अपन बेगरते आन्हर।
सम्मुख बात ओ करत चहटगर
मुदा परोछमे घात करत।

दौलतमन्द महान कहाबए
निर्धन बुझल जाए गंवार।
जेकर कमैनीक अंगठौनी
ओकरे बुझए सभ बैमान।

लदल जमाना सिद्धान्त केर
पोथिए धरि समटल रहि गेल।

साँच कहवा लेल आना-कानी
झूटक थोपड़ी खूब बजैत अछि।

संविधाने धरि समटल समता
टाल ठोकए आइयो विषमता
तैयारी जेबाक अछि चाँनपर
धूल फाँकए बहूजन समाज।

चतुर सियान सरकारक पिट्ठू
बाजय एना जेना गुणधिच्चू।
ऑफीस अपन दलान बूझैत अछि।
पैसा गरीबक खूब ठकैत अछि।

बोतल नव आ पुरन के दारू
शोषणपर अछि सभ उतारू।
जे करए समाजकेँ सभ दिन पोषण
ओकरे होइत अछि सभ दिन शोषण। ❑

फुलझरिया

गे फुलझरिया केतए जाइ छै
कह कत्तऽ छौ तोहर गाम।
बक-बक सफेद कपड़ा बदनपर
आगू-आगू दौड़ल जाइ छौ
दू टा मोहर केकर नाओं।

नहि बनऽ अंजान हो भैया
हम छी तोरे बहिन गमैया
लॉक डाउन केर मारल हम
अप्पन परारसँ हारल छी।

बौआक बाबू काज करै छलाह
बाहर जा कऽ उद्योगमे
जीवन यापन होइ छल सबहक
हुनके कमाइसँ हो भैया।

भेल मोबाइलसँ बात ओ कहलैन
अप्रैलमे घर अबै छी फुलझरी
मूरन करब दुनू बौआक आ
करब गाममे भोज-भात।

पकड़ि लेलक रफ्तार कोरोना
देशमे लागल लोकडाउन
आबा-जाही सभ बन्न भेल
सभ उद्योग बन्न भेल हो भैया।

किछुए दिन धरि देलक साथ
मालिक मजदूर के हो भैया
कन्नी काटि भागल मालिक
मजदूर पेड़ाएल हो भैया।

कहलैन भेल भोजनोपर आफद
हम घर अबै छी फुलझरी
भूखे मरब तँ घरे मरब
निज जन्म भूमिपर फुलझरी।

बरसए लागल आँखि हम्मर
निन्नो हेराएल हो भैया
कहलैन हम पैरे अबै छी
साथी सभ संगे फुलझरी।

सात तारिखक बादसँ
टूटल सम्पर्क मोबाइलसँ
शंका समाएल मोनमे

घरमे कोहराम मचल हो भैया।

भूखक मारल बाटक झमारल
ओंघरा गेल रेलक पटरीपर
हुनकर पीठपर माल गाड़ी
दौड़ि गेल सर-सर हो भैया।

औरंगाबादमे मेटा गेल
सेनुर हम्मर हो भैया
ई दुनू मोहर हम्मर
हम राड़ भेलौं हो भैया

विकासशील अछि देश अप्पन
श्रम शक्तिक सहयोगसँ
ओक्कर कल्याणक बात करए
नेता सभ केबल मंचसँ।

शासक हो वा सामन्त
नहि छै स्वार्थक केकरो अन्त
नहि छै केकरो देशमे
मजदूरक चिन्ता हो भैया! ❑

ढिठगर नेन्ना

बिजुरी चमकल बादल गरजल
उमकल गाए बछ्डुआ उमकल।
गुरगुट काका गिरल चितङ्गेँ।
भैंसी उमकल जोरसँ।

गुज-गुज अन्हार सुझए ने बाट
गुरगुट काका धेलनि खाट।
बुढ़-जवान सभ घरे नुकाएल
घर-घर लागल टाटी।

सूपक सूप जल बरसए लागल
क्षण-क्षण उनका ठनकए लागल
तैयो बाहर किलकारी मारए
ढिठगर नेन्ना भुटका।

थप-थप पैर थपारए मुनियाँ
नहा रहलि ओरियानीमे
चिकरि रहल छै दादी अम्मा
तैयो मुनियाँ दइ ने कान

माए उठौलक मोटग़र छौंकी
भागलि मुनियाँ जोरसँ
खूब पिटाएल माइक हाथे
कानए मुनियाँ नोरसँ।

पोछि नोर पहिरौलक कपड़ा
दादी अप्पन हाथसँ
भूला रहल छै दादी ओकरा
अप्पन मिठगर बातसँ

साँझे राति अनमना गेल ओ
आनल गेल दवाइ बजारसँ
तैयो हफ्तो कुहरैत रहल ओ
सरदी आओर बोखारसँ। ❑

डोलल इमान

उदरपूर्ति हित पाँच सम्बल
तैयो उदर भुक्खल किएक
ई उदरपूर्ति सम्भव कोना
संतोष निरा सपना जखन।

सभ कर्म आ अपकर्म उदरहित
ई उदर भेल नमहर केतेक!

निकलि गेहसँ, जुड़ल मेहसँ
दिन भरि चक्कर काटि रहल।
ई हम्मर ओ ओक्कर कहि-कहि
निजताक घेरा डालि रहल।

तैयो नहि ई भूख मेटाएल
सभ तिक्रमकेँ अपना रहल।

डोलल इमान, तोड़लक तमाम
ओ विधि विधान अनुशासनों।
उदरपूर्ति मात्रहि बहाना
नर स्वार्थक सीमा टपि रहल।

प्रबल असंतोष सामाजमे
बना रहल दुर्बल मनुजकेँ।

ई भूख बहाना अछि मगर
नर ग्रसित लोभ आ मोहसँ
जन-जनक हक लूटि-लूटि
अपसंचय कऽ रहल लोक।

कियो खाइते-खाइते मरि रहल
आ भुक्खल भुखले रहि रहल। ❑

संविधान

संविधानसँग्रह विधानक
आधार मनुक्खक विकासक।
जाति, वर्ग आ धर्म रहित
सम्बल सबहक कल्याणक

प्रजातंत्रक सबल प्रहरी
रक्षक जनताक अधिकारक।

नहि कियो छोट, आ नहि पैघ
पर्णकुटी वा महलमे।
सबहक समान भागीदारी
राजा, रंक आ भिखारी।

नहि करैत अछि भेद केकरोसँ
युवा-युवती आ नर-नारी।

सभ धर्मक अछि सार अइमे
देशक निहित रफ्तार अइमे।
शान्ति आ सद्भाव अइमे
जानए ई सौंसे सँसार।

जनजनक सम्मान सुरक्षित
भारतक अइ संविधानमे।

शिक्षा महासबल धूरी अछि
प्रजातंत्रक सफलताक
प्रजातंत्र अछि विफल देशमे
जा धरि सफल नहि समान शिक्षा प्रणाली।

मंत्री हो वा गरीबकसँतान
सबहक शिक्षा एक समान। ❑

बटुआ

अमावश्या नहि पूर्णिमा अछि
राति सेहो अछि दिनक समान
नहि कोनो आशंका केकरो
सभ निर्भय सभ ठाम छल।

भेल अचानक कोलाहल
जनताक दरबारमे

लागल भीड़ अचानक
जनताक दरबारमे
मुदा ई की! सभ कियो अवाक्
केकरो मुँहमे बकार नहि।

शंकाक कोनो बात अछि
ई प्रजातंत्रपर घात अछि।

लांछित करए सभ एक दोसरकेँ
सभकेँ सभ गारि पढ़ैत अछि
ऊपरसँ निच्चाँ धरि घाल मेल
सबहक सभसँ ताल-मेल।

ई सिकवा शिकाइत आ गारि नहि
ओकर सपनाक अछि किलकारी।

रंग-विरंगक चेहरा मुदा
मानस एक्कहि अछि सभक।
सभपर चढ़ल अछि केचुआ
के ओ बिपटा आ कियो नटुआ।

नहि सुधी जनताक अछि कियो
सभ भरि रहल अप्पन बटुआ। ❑

प्रकृतिक पूजा

सभसँ पहिने देथि रोशनी
दिनकर हमरे देशमे
गामक टिल्ही परती पराँतपर
ढुलमुल-ढुलमुल नेन्ना नाचय।

गाम घर आ मकई खेतमे
बान्हल ऊँच मचानपर।

गामक दक्खिन नदी कछारपर
पाँखि सुखाबए सिल्ली चाहा
हरियर दूबिपर बिखरल मोती
पहिरि पलास पीयर धोती।

माल-मवेशीक घंटी टन-टन
पाँती लागए बीच बान्हपर।

जँ दूपहरियामे दिनकर जी।
उग्र रूप धरि उगलथि आगि।
धरतीपर तरबाक सीर जरय
कत्तौ वृक्षक छाँहमे हम भागी।

आँखि मिचौनी, चोरबा नुक्की
खेली बड़क छाँहमे।

रंग बिरंगक चिरै-चुरमुन्नीक
हम सभ मधुरसँगीत सुनी
ठंडा-ठंडा बहए बयार
आबए रसालक ठहुरीसँ

आलस आबए सुख निन्नमे
सूति रही विश्राम करी

भलहि क्रिकेटक आएल जमाना
नव युगक नव ताना-बाना
नव उत्साह, नवल उर्जासँ
तैयो किशोर सभ चिक्का दरबर

खेलय अप्पन गाममे
पीपर बड़क छाँहमे।

बिखरल प्राकृतिकसँसाधन
सौंसे ऐ सँसारमे
सजीव, निर्जीव आ जड़ी-बूटी।
उपलब्ध जन कल्याण हित।

सभसँ पहिने प्रकृतिक पूजा
होइत अछि हमरे देशमे। ❑

ऊपर जमीनसँ

अहाँ छी ऊपर जमीनसँ
बहुत रास ऊपर! बहुत रास ऊपर
हंसी लगैत अछि अहाँके
आ लगबे करत।

किएक तँ हम छी जमीनपर।

हंसी तँ हमरो लगैत अछि
आ लगवे करत हमरो हंसी।
किएक तँ सभटा उपयोगी वस्तु
अछि ऐ जमीनेपर।

उतरए पड़ैत अछि अहूँकेँ जमीनपर
आ उतरए पड़त लेबाक लेल आम जमीनपर
जँ नहि मिल सकल आम तँ बेर-बेर
झांकए पड़त लेबाक लेल आम जमीनपर

हमरा की हम तँ छीहे जमीनपर

यौ अहाँ तँ खिसकि कऽ चलि गेलौं पश्चिम
मुदा हम्मर स्थान एखनो पूरबे अछि

सूर्यक पहिला किरण पड़ैत अछि
सभसँ पहिने हमरे शरीरपर
किएक तँ हम छी जमीनपर। ❑

चोंचा

ओएह चंदा ओएह सूरज
ओएह हवा आ पानी आइयो
सुखल छज्जा के समटने
ओएह ताड़क गाछ आइयो।

मुदा नजरि नहि आबए कहियो
छज्जापर लटकल चोंचा।
नहि कला नहि कलाकार ओ
सभटा नजरिसँ ओझल भेल।

कूस, डाभी तारक पातसँ
बीनल गेल बगराक खोंता
खोंताक मांझ साटल रहै छल
काँच-काँच चालीक माटि।

देखबामे बड़ छोट बगरा
ओकर बुद्धि विलक्षण छल कतेक

भगजोगनीकेँ पकड़ि-पकड़ि
साटि दइ छल काँच माटिमे।

चराउर करै छल दिन भरि कत्तौ
गाम, घर, चर-चाँचरमे
विश्राम करै छल रातिमे दम्पति
चूजाकसँग अप्पन चोचामे।

लाखों खर्चसँ बनाओल गेल
सरकारी पुल आ पुलिया
धराशायी भऽ जाइत अछि
बरसातक कनियें पानि बिहारिमे।

नहि चुना, नहि सीमेन्ट आ सुरखी
देखल अछि चोंचाक खुबसुरती
अन्हर, बिहारि सभ टा सहै छल
छज्जामे बनाओल चोंचा नहि गिरै छल।

कहू ओ कत्तऽ शिक्षा पौने छल
प्रशिक्षित कत्तऽ भेल छल ओ
केतेक छल ओ स्वाभिमानी
स्वाभिमानसँ जिनगी सजौने छल।

मुहूर्त्त कालसँ पहिलहुक
कचबचियाक कलख।
टिटहीक टिटकार बाध-बोनमे
सुनब आब दुर्लभ भऽ गेल।

दुर्लभ उड़न छू दुर्लभ जीव
आइ नजरिसँ ओझल भेल
स्वच्छ रखै छल पर्यावरणकेँ
कहू गिद्ध कत्तऽ चलि गेल। ❑

प्रेमक पांती

करए अठखेल बदरा संग चन्दा
खोलय अन्हरिया के पोल
रहि रहि इजोरिया खिड़किया के झाँकइ
शिथिल भेल मनमा के डोर।

शुभ केसँदेश जतए काकोके बोलिया
मिथिला के बोल अनमोल
मिथिला के बोल अनमोल

जो जो रे कौआ जतए प्रियतम कमौआ रे।
खाय ले देबौ पूड़ी गमकौआ रे
नोरहिसँ लिखै छी प्रमेक ई पांति
पढ़ि-पढ़ि आखर के दहलैए छाती।

बटिया जोहैत पिया बीतल धनकटनी
एक्केटा आश अछि फगुआ के
एक्केटा आश अछि फगुआ के
जो-जो रे कौआ जतय प्रियतम कमौआ रे
खाए ले देबौ पूड़ी गमकौआ रे।

नोरहिसँ भीजैए आँचर यौ सजना
फरकैय गात हम्मर खनकैय कंगना।

देखि-देखि सपना उठै छी चेहा कऽ
आँगनमे देखी भोरे कौआ के

जो रे कौआ जतए प्रियतम कमौआ रे
खाय ले देबौ पूड़ी गमकौआ रे।

छोड़ि अप्पन माटि-पानि भेलौं परदेशी
सभटा तँ जनिते छी की लिखू बेसी।
छुच्छे हाथे आऊ पिया खेलैले फगुआ
नहि छै जरूरी खाली ढौआ के।
जो-जो रे कौआ जतय प्रियतम कमौआ रे
खाए ले देबौ पूड़ी गमकौआ रे। ❑

कच्छर

कच्छर काटि रहल अस्सी
मुट्ठी भरि लोकक आजादी।
ऊपर-ऊपर चलि-चलि नेता
देखि रहल सबहक बर्बादी।

गर्वसँ ठोकए टाल विदेशमे
बढ़ि रहल आगू देश हम्मर।
शैलानीकेँ टहलाबैथ ओ
बम्बइ, आगरा आ दिल्लीमे।

साँचे बढ़ैत अछि देश तँ
घुमाऊ हुनको सुदूर देहातमे
जेतए बसावट उजरल अपटल
धूप निहारए टूटल टाट आइयो।

बीत रहल अछि साल पचहतरि
चढ़ल कपारपर साल छिहतरि।
नहि प्रजातंत्रक अनूकूल व्यवस्था
सभटा लागि रहल प्रतिकूल।

केतेक दूर एखनो आजादी
भऽ रहल नव पीढ़ीक बर्बादी

सभ अछि बहादुर मंचे धरि
मुदा जमीनपर बदलल-बदलल।

सत्य ने बाजऽ चाहए जनता
जे बाजय कहाबए देश द्रोही
जबरन भुकाबए सत्ता हरदा
नहि भुकलापर झाड़य गरदा।

द्रुत गतिसँ तैयार भऽ रहल
ऊँच नीचक खाइ आइयो।
दृष्टिगोचर सर्वत्र विषमता
संविधानक पन्ने धरि समता। ❑

गुण गहवर

एक्केटा माली पटाबए जगतकेँ
हम सभ छी फूल एक्के उपवन केर
पढ़ब, लिखब आ कदम हम मिलाकऽ चलब
आपसमे प्रेम करब जगकेँ अपनाक चलब।

नाचब गाएब खुशी हम मनाय
हम सभ छी फूल एक्के उपवनके।

खूब खाएब, खूब खेलब रहब साफ-सुथरा
हम सभ छी एक्के जिगर केर टुकड़ा
साँच बात बाजब मधुर बात बाजब
हम सभ छी फूल एक्के उपवनके।

पाबैन-तिहार इद, कृसमस आ फगुआ
ओनम, बैसाखी आ सरहुल कोजगरा
बाइस पाबैन जुड़शीतल सभकेँ जुड़ाबए
हम सभ छी फूल एक्के उपवनके।

हिंदुस्तानी हम छी हिंदर हम्मर
अनेकतामे एकता विशेषता ई हम्मर
देश ई हमर अछि महागुण गहबर
हम सभ छी फूल एक्के उपवनके। ❑

बड़की काकी

साँझे दी पराते पावी
कर्मक फल अवश्यम्भावी।
अप्पन सेखी खूब बघारी
मुदा गरीबकेँ नहि दुतकारी।

बड़की काकी बड़ टिपोरी
पढ़ैथ राति-दिन पतरा-पोथी।
सेवा टहल करए खुरलुचिया
तेकर छाँहसँ दूर रहैथ ओ।

जे कुक्कुर बिष्ठाकेँ चाटय
करी दुलार तँ देहो चाटय।
नहि छुआथि ओकरासँ काकी
खुरलुचियासँ खूब छुआइ छैथ।

आज्ञाकारी बड़ खुरलुचिया
पर अधिकार कहियो नहि पौलक।
छल गरीबीक मारल ओ
तेँ बड़ चिक्कन बड़की काकी।

लगे दाढ़ी पड़ोसे छूरा
काकी बनली आइ घुरघूरा।

एक्को डेग चलबामे अक्षम
लोथ बनल छैथ बड़की काकी।

बेटा हुनक रुपैयाबला
सौंसे गाममे बोलबाला।
ओ विदेशमे काटैथ चानी
काहि कटै छैथ गाममे काकी।

आइ बनल अछि बौआ नूनू
काल्हि अछूत छल जे खुरलुचिया।
हगनी-मुतनी करैए छठिया
साँझ बिहान ओ धोबए खटिया।

सभ दिन रौदमे खाट बिछा कऽ
बड़की काकीकेँ लेटा दैत अ़छि।
बगलमे बुधना भैंस चरबैत अछि
गढ़ि गढ़ि बात बजैत अछि बुधना।

आब जमाना बदैल गेलैए
आब कहू मन केहेन करैए।
खटिया जकरासँ छुआइ छल
ओकरे हाथे भोग लगैए
आब कहू मन केहेन करैए? ❑

सम्यक विचार

की पाप थिक, की पूण्य थिक,
की पाप पुण्यक नाप थिक।
हम अगम अथाहमे पड़ल छी।
सम्यक परिभाषा नहि जानी।

भगवद्गीता, रामायण पाठ,
होम जाप सभटा करी।
अहंकार पूजा-पाठक
सम्यक विचार हम नहि जानी।

बिसरि समाज आ देश
ग्रसित हम स्वार्थ भावसँ।
अन्हराएल अन्तर्मुखी हम,
मोल परमार्थक नहि जानी।

दिया तँ जरा अबै छी
कुलदेवीक गहवरमे।
मनमे गुज-गुज अन्हार
अन्तरज्योतिकेँ हम नहि जानी।

बपहारि कटै छल बेंग हत्ता कातमे
धेने छल मोटका साँप ओकरा

द्रवित भऽ गेल मोन हम्मर
सुनि बेंगक करुण क्रन्दन।

न्याय की? अन्याय की?
की नाप न्याय अन्यायक?
हम अगम अथाहमे पड़ल छी
सम्यक परिभाषा नहि जानी।

काम तमाम भऽ चुकल छल
साँपकेँ भगाइयो दितौं तैयो
बेंगक जान नहि बँचैत
आ साँप बेचारा भुखले रहैत।

अन्तर आत्मामे स्वर गुंजिते रहल
की पाप थिक आ की पूण्य?
की पाप-पूण्यक नाप थिक?
सम्यक परिभाषा नहि जानी। ❑

फगुआक रंग

घर-घर फगुआक रंग जमल छै
हल्ला ई टोला-मोहल्ला जी
बड़की भौजी कत्तऽ हरेली।
दुरिया पसारए सभ देबरा जी

बड़की ननैदकेँ साल सोलहम
नहि भेलै शादी गओनमा जी
छोटकी ननदिया बिसुन बिलाइ छै
मारै छै मुस्की चौवनिया जी।

मैझली भौजीक रंग परवाना
मारै छै रहि-रहि ताना जी।
भाइए बहिनमे खेलि लिअ फगुआ
दी-दी के नहि छै ठेकाना जी।

छोटकी भौजीकेँ भाराल हुरार लऽ कऽ
की करतै घरे लवकनियाँ जी।
आइ ललटुनमो भूते बनल छै
बौआ मारए हफकुनियाँ जी।

फगुआक रंगमे सराबोर सभ
रंगे-रंगाएल दिलजनियाँ जी।

ई कोनघुसरा की कऽ सकतइ
खाट देलक पेटकुनियाँ जी। ❑

प्रेमक पुरिया

प्रेमक पुरिया खोललक फगुआ
उज-बुज घरे बहुरिया जी।
बाबू मतारीकेँ पैर दुनू चकमक
हाथ हुनक हम्मर मत्था जी।

जिनकर लगौल अइ फुलवारीमे
किलकए जवान, बुढ़, बच्चा जी
दादा आ दादीक पैर दुनू चकमक
हाथ हुनक हम्मर मत्था जी।

घर भरल सम्बन्धिक जत्था
भाए-बहिन नेन्ना-भुटका जी
चाचा आ चाचीक पैर दुनू चकमक
हाथ हुनक हम्मर मत्था जी।

बाप सरुप जे बड़का भैया
माए सरुपा भौजी जी

भैया आ भौजींक पैर दुनू चकमक
हाथ हुनक हम्मर मत्था जी।

टिकट कटा घर एलखिन दीदी
संगहि एला बड़का जीजाजी
जीजा आ दीदीक पैर दुनू चकमक
हाथ हुनक हम्मर मत्थाजी।

जीजा हम्मर सिनेहक पुतला
सिनेह भरल हम्मर दीदी जी
जीजाक गाल दुनू करगर जिलेबी
सालीक गाल रसगुल्ला जी। ❑

बरखा

झंका उठा लेबक बरखा
ओ बजा रहल नभमे डंका
धेलक ई अप्पन रूप सतहिया
यूर्योकेँ भेल ममररखा।

सन-सन हवा बहए पुरबैया
कलकल कोसी धार बहए
हेराएल छोट-छिन पोखैर-झाँखैर
लुक-झुक ताल तलैया।

समैट रहल नहि बरखा भाम्हर
करए बुजुर्ग सभ टोना-टापर
किछु नहि मानए हथिया झट्टक
सौंसे गाम लगौलक फट्टक।

रहितो अन्न विपन्न भेल छी
खोनहीमे दुबकल भीजल बिलाइ
काँचे जाड़ैन हुक्कुर-धुक्कुर
नेन्ना कानए भुक्कुर-भुक्कुर।

भीजल बथानपर पर्रू हुकरए
निंघंटि गेल अछि भूंसा-चोकर

हरियर घास नदारद भेल
जानक दुश्मन बनल सतहिया। ❑

स्वार्थक मोटरी

अफरा-तफरी, दौड़-धूपमे
तन मोटगर मन दुर्बल भेल।
स्वार्थक मोटरी लादि पीठपर
कलुषित मनसँ गहवर गेल।

एक हाथ जल-पात्र
दोसरमे फूलक डाली।
करए स्तुति गान गहवरमे
बजा-बजा ओ ताली।

हे देवी माँ तोरे कहबह
अगिला बेर खस्सी चढ़ेबह।
लगा दऽ नोकरी बौआकेँ
झाँपो हम चढ़ेबह।

हे जगतारनि तोरे कहबह
मनसा पूरत तँ फेरो एबह।
ओ बेटखौकी शान देखाबए
ओक्कर शान जरूरे तोड़िहह।

मनमे राम बगलमे छुड़ी
सबल बनाबए स्वार्थक धूरी
बैरे भरल दिलक सभ कोना
करए ओ दिन भरि टापरे टोना। ❑

कत्तऽ चलल

कतए चलल नेंगराइत देखू
आँखिसँ लोर ढारैत देखू
धँसल आँखि झुर्री मुखारपर
बोझिल कुटिलताक भावनासँ।

बहुजनक अवमाननासँ
आत्म ग्लानिसँ जरैत देखू।

सिद्धान्तमे नहि भेद कोनो
ओ बिसैर गेल सिद्धान्तकेँ
भेद-भावसँ ग्रसित ओ
निज श्रेष्ठताक भाव मनमे।

करए लागल अधिकार हनन
जन-जनकेँ शोषण करैत देखू।

नहि समस्या उत्पादनक
अछि समस्या वितरणक
समानताक सिद्धान्त जेकर
बन्धुत्व भाव आदर्श जेकर।

बिसैर गेल आदर्शकेँ
भाय-भायमे लड़ैत देखू।
खण्डित भऽ गेल आजादी
बंचित गरीब सभ दण्डित भेल
सभठाम परिलक्षित विषमता
भोजन, वस्त्र आवासमे।

चलए रफ्तारसँ आगू-आगू
आजादी प्रतिबन्धित देखू।

नहि आदर जन भावनाक
स्वार्थे चढ़ल कपारपर
बलात्कार, भ्रष्टाचार आइ
झकझोरि रहल जन-जीवनकेँ।

पाछाँ छुटल समाजवाद
सामन्तवाद आगू देखू। ❑

बसन्तक आगमन

भेल बसन्तक आगमन
आ जाड़ाक विदाइ भेल।
पीयर-पीयर फूल सरिसोक
धरतीक गात नव हरित भेल।

मञ्जर आच्छादित रसालक
रसास्वादन कऽ रहल तितली।

मौसम दोरस नहि जाड़ा नहि गर्मी
भौंराक गूंज कोइलीक कूक
बाजए लागल सहनाई
आब प्रकृतिक स्वागतमे।

धरतीक भेल आँचर बहुरंगी
आ नभ मण्डल श्वेत भेल।

रंग-अबीर लऽ आएल फगुआ
डंफा-डफलीक रागमे।
घर-घरमे आएल शुभ लगन
विवाह उपनैन मुरनक मुहूर्त्त।

आब प्रकृतिक रंगमे
जन मानस सेहो रंगि गेल।

सभ दलानपर नवागन्तुक
कतौ वर, कतौ कन्यागत।
मुखर भऽ रहल अछि प्रमाण
सम्मिश्रण प्रकृति परम्पराक।

भिन्न-भिन्न क्रिया-कलाप सभक
सभ तल्लीन प्रकृतिक स्वागतमे।

रंग-बिरंगक मौरसँ
सजि गेल घर मालीक
डाला चंगेरी मेघडम्मरसँ
सजि गेल घर सभ डोमक।

सभसँ बेगरता अछि सभकेँ
खोलए पोल ढोंगी, पाखण्डीकेँ। ❑

घराड़ी बन्हकी

एक घर खुशियाली आएल
बड़ खुशीक ई बात
जश्न मनाएब अइ खुशियालीक
सहजहि खुशीक अछि बात।

परंच एकटा दुखक बात
लाउडस्पीकरक तीव्र ध्वनिसँ
एक पड़ोसीक हृदयरोगी
साँस अन्तिम गनि रहल अछि।

जश्न मनौनिहारक घर
पहुँचल ओइ रोगीक स्वजन
नहि भेल आदर भाव नाक
अप्पन डफली अप्पन राग।

परंच एक दुखक बात
मरि गेल रोगी कुहैर-कुहैर
मचि गेल घरमे कोहराम
तैयो पड़ोसी बेखबर अछि।

एक नवालिक पुत्र मृतक केँ
अछि उत्तरी जेकरा गरदैनमे

संगहि मतारि मसोमातमे
ठाढ़ अछि सामाजिक दरवारमे।

परंच एकटा दुखक बात
दरवारमे ओएह बहुसंख्यक अछि
जे रोगीक मरवाक समयमे
जश्न मना रहल छल।

आब मौका अछि ओइ मसोमात
आ नावालिक पुत्रक
सामाजिक रेबाज निभेवाक छै
समाजमे रहबाक लेल।

परंच एकटा दुखक बात
सामाजिक फरमान अबैत अछि
मृत्यात्माक शांति हित किछु तँ करू
मसोमात अप्पन घराड़ी बन्हकी लगा देलक। ❑

❑❑❑
❑❑
❑

Notes